

राजस्थान में पर्यटन और पर्यावरण संरक्षण के बीच संबंध का अध्ययन

Manoj Bairwa

Ph.D. Scholar

Department of Geography

Malwanchal University Indore, (M.P.).

Dr. Narayan Singh Negi

Supervisor

Department of Geography

Malwanchal University Indore, (M.P.).

सार

राजस्थान में पर्यटन और पर्यावरण संरक्षण के बीच संबंध बहुआयामी, जटिल तथा परस्पर निर्भर है। एक ओर पर्यटन राज्य की प्राकृतिक, सांस्कृतिक और विरासत संपदाओं पर आधारित है, वहीं दूसरी ओर अनियोजित पर्यटन गतिविधियाँ जल-संकट, ठोस अपशिष्ट, प्रदूषण, वहन-क्षमता पर दबाव, आवास-विनाश और पारिस्थितिक असंतुलन जैसी समस्याओं को बढ़ा सकती हैं। विशेष रूप से राजस्थान जैसे शुष्क और अर्द्ध-शुष्क प्रदेश में जल, भूमि, वन्यजीव और नाजुक मरुस्थलीय पारितंत्र पर पर्यटन का प्रभाव अधिक संवेदनशील रूप में दिखाई देता है। साथ ही, यदि पर्यटन को उत्तरदायी और सतत दृष्टिकोण से विकसित किया जाए, तो यही क्षेत्र संरक्षण-निधि, स्थानीय आजीविका, सांस्कृतिक विरासत संरक्षण, हरित अवसंरचना, सामुदायिक भागीदारी और पर्यावरणीय जागरूकता को भी सुदृढ़ कर सकता है। राजस्थान की पर्यटन नीति, इकोटूरिज्म नीति, वन नीति तथा भारत की राष्ट्रीय सतत पर्यटन रणनीति इस संतुलन को संस्थागत आधार देती हैं। अतः अध्ययन का केंद्रीय निष्कर्ष यह है कि राजस्थान में पर्यटन को केवल आर्थिक गतिविधि के रूप में नहीं, बल्कि पर्यावरणीय प्रबंधन, स्थानीय भागीदारी और दीर्घकालिक संसाधन-सुरक्षा के साथ जोड़कर देखना आवश्यक है। यही दृष्टिकोण पर्यटन और पर्यावरण संरक्षण के बीच टिकाऊ सह-अस्तित्व का आधार बन सकता है।

मुख्य शब्द: राजस्थान, पर्यटन, पर्यावरण संरक्षण, सतत पर्यटन, इकोटूरिज्म, जैव विविधता, सांस्कृतिक विरासत, जल-संकट, प्रदूषण, स्थानीय समुदाय।

परिचय

राजस्थान भारत के प्रमुख पर्यटन राज्यों में से एक है, जहाँ मरुस्थल, वन्यजीव अभयारण्य, झीलें, दुर्ग, महल, धार्मिक स्थल, लोक—संस्कृति और ग्रामीण जीवन पर्यटन की विशिष्ट पहचान बनाते हैं। इस कारण राज्य में पर्यटन केवल आर्थिक विकास का साधन नहीं है, बल्कि पर्यावरणीय और सांस्कृतिक संसाधनों से गहराई से जुड़ा हुआ क्षेत्र है। पर्यटन का आधार स्वच्छ पर्यावरण, सुरक्षित पारिस्थितिकी, संरक्षित विरासत और आकर्षक प्राकृतिक परिदृश्य होते हैं, इसलिए पर्यावरण संरक्षण के बिना पर्यटन की दीर्घकालिक स्थिरता संभव नहीं है। राजस्थान पर्यटन नीति 2020 और 2025, तथा राज्य वन विभाग द्वारा सूचीबद्ध राजस्थान इकोटूरिज्म नीति 2021 और राजस्थान वन नीति 2023, पर्यटन विकास को अधिक टिकाऊ, जिम्मेदार और संसाधन—संवेदी दिशा में ले जाने की आवश्यकता पर बल देती हैं। भारत सरकार की राष्ट्रीय सतत पर्यटन रणनीति 2022 और मिशन लाइफ आधारित पर्यटन कार्यक्रम भी पर्यटन क्षेत्र में पर्यावरणीय उत्तरदायित्व, स्थानीय भागीदारी, संसाधन—दक्षता और अपशिष्ट न्यूनीकरण पर जोर देते हैं।

राजस्थान के संदर्भ में यह संबंध और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि राज्य का बड़ा भाग जल—अभाव, तापीय तनाव, मरुस्थलीय नाजुकता और सीमित संसाधनों से प्रभावित है। ऐसे में होटल, परिवहन, भीड़भाड़, ठोस अपशिष्ट, प्लास्टिक उपयोग और भूमि—उपयोग परिवर्तन जैसी पर्यटन गतिविधियाँ पर्यावरण पर प्रतिकूल दबाव डाल सकती हैं। दूसरी ओर, शोध यह भी दिखाते हैं कि पश्चिमी राजस्थान और जोधपुर क्षेत्र में इकोटूरिज्म की पर्याप्त संभावनाएँ हैं, यदि उनका नियोजन वैज्ञानिक, भू—स्थानिक और संरक्षणोन्मुख दृष्टिकोण से किया जाए। हालिया अध्ययनों ने यह भी संकेत दिया है कि राजस्थान में इकोटूरिज्म के प्रति जन—जागरूकता और समर्थन बढ़ाने के लिए शिक्षा, स्थानीय अनुभव और क्षेत्रीय पर्यटन—योजना महत्वपूर्ण कारक हैं। इसलिए यह अध्ययन पर्यटन को केवल आय—सृजन के रूप में नहीं, बल्कि पर्यावरणीय संतुलन, सांस्कृतिक संरक्षण और समुदाय—आधारित विकास के साथ जोड़कर समझने का प्रयास करता है।

पर्यटन और पर्यावरण के बीच संबंध

पर्यटन और पर्यावरण के बीच एक जटिल और परस्पर निर्भर संबंध है। पर्यटन प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों पर बहुत अधिक निर्भर करता है, वहीं पर्यटन गतिविधियाँ स्वयं पर्यावरण को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह से प्रभावित करती हैं। इस संबंध को समझना सतत प्रथाओं को बढ़ावा देने, पर्यावरण क्षरण को कम करने और पर्यटकों तथा स्थानीय समुदायों में जागरूकता बढ़ाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

पर्यावरण पर पर्यटन के सकारात्मक प्रभाव

जिम्मेदारीपूर्वक योजनाबद्ध पर्यटन कई तरीकों से पर्यावरण संरक्षण में योगदान दे सकता है:

1. पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता

- ✓ राष्ट्रीय उद्यानों, वन्यजीव अभयारण्यों और रेगिस्तानों जैसे प्राकृतिक क्षेत्रों का दौरा करने वाले पर्यटक अक्सर पारिस्थितिकी तंत्र और जैव विविधता का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करते हैं (वीवर, 2001)।
- ✓ पर्यावरण संबंधी जानकारी देने वाले केंद्र, पर्यावरण गाइड और निर्देशित पर्यटन आगंतुकों को संरक्षण के महत्व को समझने में मदद करते हैं।
- ✓ प्राकृतिक आवासों के संपर्क में आने से पर्यटकों को पर्यावरण के अनुकूल व्यवहार अपनाने के लिए प्रोत्साहन मिलता है।

2. संरक्षण के लिए वित्तपोषण

पर्यटन पर्यावरण संरक्षण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रवेश शुल्क, दान और अन्य पर्यटन संबंधी सेवाओं जैसी पर्यटन गतिविधियों से प्राप्त राजस्व का उपयोग अक्सर पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रमों के वित्तपोषण के लिए किया जाता है (बकली, 2009)। कई पर्यावरण-पर्यटन पहलें वन्यजीव संरक्षण, वनीकरण कार्यक्रम और पर्यावास पुनर्स्थापन परियोजनाओं सहित विभिन्न संरक्षण गतिविधियों के समर्थन के लिए पर्यटक आय पर निर्भर करती हैं। ये निधियाँ सरकारों, संरक्षण संगठनों और स्थानीय समुदायों को संरक्षित क्षेत्रों का प्रबंधन करने, राष्ट्रीय उद्यानों का रखरखाव करने और लुप्तप्राय प्रजातियों की रक्षा

करने में सहायता करती हैं। कई क्षेत्रों में, पर्यटन एक महत्वपूर्ण आर्थिक साधन बन गया है जो प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र और जैव विविधता के संरक्षण में प्रत्यक्ष योगदान देता है।

3. सतत प्रथाओं को बढ़ावा देना

पर्यटन स्थानीय समुदायों और पर्यटन व्यवसायों दोनों के बीच टिकाऊ पर्यावरणीय प्रथाओं को अपनाने को भी बढ़ावा देता है। पर्यटन के विकास के साथ-साथ, पर्यटन स्थलों की दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता के प्रति जागरूकता बढ़ रही है। स्थानीय समुदायों को वनों, वन्यजीवों और प्राकृतिक परिदृश्यों के संरक्षण के लिए प्रोत्साहित किया जाता है क्योंकि ये संसाधन पर्यटकों को आकर्षित करते हैं और आय उत्पन्न करते हैं। साथ ही, होटल, रिसॉर्ट और टूर ऑपरेटर जैसे पर्यटन से संबंधित व्यवसाय पर्यावरण के अनुकूल या “हरित” पहलों को तेजी से लागू कर रहे हैं। इनमें अपशिष्ट पुनर्चक्रण कार्यक्रम, जल संरक्षण तकनीकें, नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग और पर्यावरणीय प्रभावों को कम करने के लिए ऊर्जा-कुशल अवसंरचना शामिल हैं (हनी, 2008)। ऐसी टिकाऊ प्रथाएं प्रदूषण को कम करने, संसाधनों की खपत को घटाने और जिम्मेदार पर्यटन विकास को बढ़ावा देने में सहायक होती हैं।

4. सांस्कृतिक संरक्षण और पर्यावरणीय नैतिकता

पर्यटन सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और पर्यावरणीय नैतिकता को बढ़ावा देने में भी योगदान देता है। कई पर्यटन स्थल सांस्कृतिक परिदृश्यों, पवित्र वनों, पारंपरिक गांवों और ऐतिहासिक या विरासत स्थलों से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। पर्यटन इन स्थानों के संरक्षण के लिए आर्थिक प्रोत्साहन प्रदान करके इनके रखरखाव और संरक्षण में सहायता करता है। स्थानीय समुदाय अक्सर अपनी परंपराओं, रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक प्रथाओं को संरक्षित करने का प्रयास करते हैं क्योंकि पर्यटक इन्हें महत्व देते हैं। इसके अतिरिक्त, पर्यटन पर्यटकों और स्थानीय निवासियों के बीच प्राकृतिक वातावरण और सांस्कृतिक विरासत दोनों के संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाता है। यह बढ़ी हुई जागरूकता पर्यावरण के प्रति अधिक जिम्मेदार व्यवहार को प्रोत्साहित करती है और पर्यावरणीय प्रबंधन और सांस्कृतिक सम्मान की भावना को मजबूत करती है।

पर्यटन का पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव

पर्यटन के अनेक आर्थिक और सामाजिक लाभों के बावजूद, यदि इसका प्रबंधन सतत और जिम्मेदार तरीके से न किया जाए तो यह गंभीर पर्यावरणीय चुनौतियाँ भी पैदा कर सकता है। तीव्र पर्यटन विकास अक्सर प्राकृतिक संसाधनों, पारिस्थितिकी तंत्रों और स्थानीय पर्यावरण पर अत्यधिक दबाव डालता है। जैसे-जैसे पर्यटकों की संख्या बढ़ती है, बुनियादी ढाँचे, परिवहन, आवास और मनोरंजन सुविधाओं की माँग भी बढ़ती है, जिसके परिणामस्वरूप उचित योजना और पर्यावरण प्रबंधन रणनीतियों के लागू न होने पर पर्यावरण का क्षरण हो सकता है। पर्यटन गतिविधियाँ संसाधन क्षय, प्रदूषण, पर्यावास विनाश और सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय क्षरण जैसी समस्याओं में योगदान कर सकती हैं। ये नकारात्मक प्रभाव पर्यटन स्थलों की दीर्घकालिक स्थिरता को खतरे में डाल सकते हैं और उन प्राकृतिक और सांस्कृतिक आकर्षणों को नुकसान पहुँचा सकते हैं जिन्हें देखने के लिए पर्यटक आते हैं।

पर्यटन से जुड़ी प्रमुख पर्यावरणीय समस्याओं में से एक है संसाधनों का क्षय। पर्यटन के लिए पर्यटकों की जरूरतों को पूरा करने हेतु जल, ऊर्जा, भोजन और भूमि जैसे प्राकृतिक संसाधनों की भारी मात्रा में आवश्यकता होती है। जब बड़ी संख्या में पर्यटक किसी पर्यटन स्थल पर आते हैं, तो इन संसाधनों की माँग तेजी से बढ़ती है और स्थानीय आपूर्ति प्रणालियों की क्षमता से अधिक हो सकती है। गोस्लिंग (2002) के अनुसार, पर्यटन गतिविधियों के कारण जल की खपत में काफी वृद्धि होती है क्योंकि होटल, रिसॉर्ट, स्विमिंग पूल, उद्यान, गोल्फ कोर्स और अन्य पर्यटक सुविधाओं के संचालन के लिए बड़ी मात्रा में जल की आवश्यकता होती है। उच्च स्तर के आराम और विलासितापूर्ण सेवाओं के कारण पर्यटक अक्सर स्थानीय निवासियों की तुलना में अधिक जल का उपभोग करते हैं। कई मामलों में, पर्यटक सुविधाओं द्वारा उपयोग किया जाने वाला जल स्थानीय समुदायों और कृषि गतिविधियों के लिए जल की उपलब्धता को कम कर देता है। यह समस्या उन क्षेत्रों में विशेष रूप से गंभीर हो जाती है जो पहले से ही जल संकट का सामना कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, भारत में राजस्थान जैसे रेगिस्तानी क्षेत्रों में सीमित वर्षा और जल संसाधन दुर्लभ हैं।

पर्यटन से जुड़ी एक और महत्वपूर्ण पर्यावरणीय समस्या प्रदूषण है। पर्यटन गतिविधियाँ वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण और ठोस अपशिष्ट प्रदूषण सहित विभिन्न प्रकार के प्रदूषण में योगदान करती हैं। पर्यटन क्षेत्र में वायु प्रदूषण का एक प्रमुख कारण परिवहन है। पर्यटक अक्सर हवाई जहाज, कार, बस, ट्रेन और नावों से लंबी दूरी की यात्रा करते हैं, ये सभी वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों और अन्य प्रदूषक छोड़ते हैं। ये उत्सर्जन जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग में योगदान करते हैं। इसके अलावा, पर्यटन स्थलों के भीतर पर्यटकों द्वारा उपयोग किए जाने वाले स्थानीय परिवहन, जैसे टैक्सी, टूर बस और मोटरबोट, भी लोकप्रिय पर्यटन क्षेत्रों में वायु प्रदूषण के स्तर को बढ़ाते हैं। पर्यटन जल प्रदूषण का कारण भी बन सकता है, विशेष रूप से तटीय और मीठे पानी के वातावरण में। होटल, रेस्तरां और मनोरंजन सुविधाओं से निकलने वाले अपशिष्ट जल में डिटर्जेंट, रसायन, तेल और अनुपचारित सीवेज हो सकते हैं। यदि उचित अपशिष्ट उपचार सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं, तो यह प्रदूषित जल आसपास की नदियों, झीलों या तटीय क्षेत्रों में छोड़ा जा सकता है, जिससे जलीय पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुँच सकता है।

ब्रैमवेल और लेन (2011) ने इस बात पर प्रकाश डाला है कि पर्यटन गतिविधियों से संबंधित अपशिष्ट प्रबंधन की कमी से नाजुक पारिस्थितिक तंत्रों में गंभीर प्रदूषण हो सकता है। पर्यटकों द्वारा उत्पन्न ठोस अपशिष्ट, जैसे प्लास्टिक की बोतलें, खाद्य पैकेजिंग, डिस्पोजेबल कंटेनर और अन्य गैर-बायोडिग्रेडेबल सामग्री, अपर्याप्त अपशिष्ट निपटान प्रणालियों के कारण अक्सर प्राकृतिक क्षेत्रों में जमा हो जाता है। यह अपशिष्ट मिट्टी और जल को दूषित कर सकता है, वन्यजीवों को नुकसान पहुंचा सकता है और पर्यटन स्थलों की प्राकृतिक सुंदरता को नष्ट कर सकता है। वायु और जल प्रदूषण के अलावा, पर्यटन वाहनों, मनोरंजन गतिविधियों और भारी भीड़ के कारण ध्वनि प्रदूषण भी उत्पन्न कर सकता है, जिससे वन्यजीवों को परेशानी हो सकती है और प्राकृतिक वातावरण में व्यवधान उत्पन्न हो सकता है।

पर्यटन विकास के कारण होने वाला एक अन्य प्रमुख पर्यावरणीय प्रभाव पर्यावास का विनाश है। पर्यटकों की बढ़ती संख्या को देखते हुए, होटल, रिसॉर्ट, रेस्तरां, सड़कें, हवाई अड्डे और मनोरंजन सुविधाओं जैसी बड़े पैमाने पर अवसंरचनाओं का निर्माण करना आवश्यक हो जाता है। ये निर्माण

अक्सर जंगलों, पहाड़ों, समुद्र तटों और तटीय क्षेत्रों जैसे उच्च प्राकृतिक सौंदर्य और पारिस्थितिक महत्व वाले क्षेत्रों में किए जाते हैं। हालांकि, निर्माण प्रक्रिया में अक्सर वनस्पति की कटाई, भूदृश्यों में परिवर्तन और प्राकृतिक पर्यावासों को नुकसान पहुंचाना शामिल होता है। इससे वनों की कटाई, मृदा अपरदन और पारिस्थितिक तंत्रों का विखंडन हो सकता है। इन पर्यावासों पर निर्भर वन्यजीव प्रजातियों को पलायन करने, नए वातावरण के अनुकूल ढलने या जनसंख्या में गिरावट के जोखिम का सामना करने के लिए मजबूर होना पड़ सकता है। इसलिए, पर्यटन विकास पारिस्थितिक संतुलन को बिगाड़ सकता है और प्रभावित क्षेत्रों में जैव विविधता को कम कर सकता है। तटीय पर्यटन विकास विशेष रूप से मैंग्रोव वनों और प्रवाल भित्तियों जैसे संवेदनशील पारिस्थितिक तंत्रों के लिए हानिकारक है। मैंग्रोव तटरेखाओं को अपरदन से बचाने, समुद्री जैव विविधता का समर्थन करने और तूफानों के खिलाफ प्राकृतिक अवरोध के रूप में कार्य करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालांकि, समुद्र तट रिसॉर्ट, मरीना और पर्यटन अवसंरचना के लिए जगह बनाने के लिए इन्हें अक्सर साफ कर दिया जाता है।

पर्यटन सांस्कृतिक और पर्यावरणीय गिरावट में भी योगदान दे सकता है, विशेषकर जब पर्यटकों की संख्या किसी गंतव्य की वहन क्षमता से अधिक हो जाती है। अत्यधिक भीड़ और अनियंत्रित पर्यटन गतिविधियाँ ऐतिहासिक स्मारकों, पवित्र स्थलों, सांस्कृतिक परिदृश्यों और नाजुक पारिस्थितिक तंत्रों पर भारी दबाव डाल सकती हैं। लोकप्रिय पर्यटन स्थलों पर अक्सर प्रतिदिन हजारों पर्यटक आते हैं, जिससे संरचनाओं और आसपास के वातावरण को भौतिक क्षति पहुँच सकती है। निरंतर आवाजाही, तोड़फोड़ और पर्यटकों के अनुचित व्यवहार से प्राचीन इमारतें, पुरातात्विक स्थल और विरासत स्मारक धीरे-धीरे कमजोर हो सकते हैं। हंटर (1997) के अनुसार, अनियंत्रित पर्यटन विकास संवेदनशील वातावरण को गंभीर रूप से नुकसान पहुँचा सकता है, विशेषकर रेगिस्तान जैसे नाजुक पारिस्थितिक स्थितियों वाले क्षेत्रों में। रेगिस्तानी पारिस्थितिक तंत्र विशेष रूप से कमजोर होते हैं क्योंकि वनस्पति धीरे-धीरे बढ़ती है और मिट्टी की स्थिरता आसानी से बिगड़ जाती है। ऑफ-रोड वाहन चलाना, कैंपिंग और बड़े पर्यटक जमावड़े जैसी गतिविधियाँ वनस्पतियों को नुकसान पहुँचा सकती हैं और रेगिस्तान के नाजुक वातावरण को बिगाड़ सकती हैं।

सतत पर्यटन एक शमन रणनीति के रूप में

विश्वभर में पर्यटन के निरंतर विकास के साथ, यह सुनिश्चित करना और भी महत्वपूर्ण हो गया है कि पर्यटन विकास से प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र, स्थानीय संस्कृति और सामुदायिक संसाधनों को कोई नुकसान न पहुंचे। पर्यटन से उत्पन्न पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान के लिए, सतत पर्यटन की अवधारणा पर्यटन विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करने की एक महत्वपूर्ण रणनीति के रूप में उभरी है। सतत पर्यटन का उद्देश्य पर्यटन गतिविधियों का इस प्रकार प्रबंधन करना है जिससे वर्तमान पर्यटकों और मेजबान समुदायों की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके और साथ ही भावी पीढ़ियों के लिए पर्यावरणीय, सांस्कृतिक और आर्थिक संसाधनों का संरक्षण किया जा सके। सतत पर्यटन पद्धतियों को अपनाकर सरकारें, पर्यटन व्यवसाय और स्थानीय समुदाय पर्यटन के नकारात्मक प्रभावों को कम कर सकते हैं और साथ ही इसके आर्थिक और सामाजिक लाभों को भी प्राप्त कर सकते हैं।

संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार, सतत पर्यटन से तात्पर्य ऐसे पर्यटन से है जो वर्तमान पर्यटकों और मेजबान क्षेत्रों की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य के अवसरों की रक्षा और संवर्धन करता है। यह अवधारणा जिम्मेदार पर्यटन विकास पर बल देती है जो पर्यावरण संरक्षण, सांस्कृतिक संरक्षण और दीर्घकालिक आर्थिक स्थिरता को ध्यान में रखता है। सतत पर्यटन का उद्देश्य प्राकृतिक क्षेत्रों के पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखना है, साथ ही यह सुनिश्चित करना है कि पर्यटन गतिविधियाँ उन संसाधनों को नुकसान न पहुँचाएँ जिन पर पर्यटन उद्योग निर्भर करता है। यह प्राकृतिक संसाधनों के जिम्मेदार उपयोग, जैव विविधता के संरक्षण और स्थानीय समुदायों के सांस्कृतिक मूल्यों के सम्मान को प्रोत्साहित करता है। इसके अतिरिक्त, सतत पर्यटन स्थानीय आबादी के लिए समान आर्थिक लाभ को बढ़ावा देता है और पर्यटन नियोजन और प्रबंधन में सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करता है।

सतत पर्यटन के प्रमुख सिद्धांतों में से एक है पर्यावरणीय प्रभावों को कम करना। पर्यटन गतिविधियों में अक्सर प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग और अवसंरचना विकास शामिल होता है, जो सावधानीपूर्वक प्रबंधन न किए जाने पर पर्यावरण को नुकसान पहुंचा सकता है। सतत पर्यटन ऊर्जा संरक्षण, जल प्रबंधन, अपशिष्ट कम करने और प्रदूषण नियंत्रण जैसी पर्यावरण के

प्रति जिम्मेदार प्रथाओं को बढ़ावा देकर इन प्रभावों को कम करने का प्रयास करता है। उदाहरण के लिए, होटल और रिसॉर्ट संसाधनों की खपत को कम करने के लिए ऊर्जा-कुशल प्रकाश व्यवस्था, नवीकरणीय ऊर्जा प्रणालियों और जल-बचत तकनीकों को लागू कर सकते हैं। पर्यटन संचालक आगंतुकों को प्लास्टिक कचरा कम करने, जल संरक्षण करने और वन्यजीव आवासों का सम्मान करने जैसी पर्यावरण के अनुकूल प्रथाओं का पालन करने के लिए भी प्रोत्साहित कर सकते हैं। पर्यावरणीय प्रभावों को कम करके, सतत पर्यटन पारिस्थितिकी तंत्र, भूदृश्यों और जैव विविधता की रक्षा करने में मदद करता है, साथ ही यह सुनिश्चित करता है कि भविष्य के आगंतुकों के लिए प्राकृतिक आकर्षण बरकरार रहें।

सतत पर्यटन का एक और महत्वपूर्ण सिद्धांत सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण है। कई पर्यटन स्थल अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं, ऐतिहासिक स्मारकों और अनूठी जीवनशैली के लिए जाने जाते हैं। हालांकि, अनियंत्रित पर्यटन से सांस्कृतिक वस्तुकरण, प्रामाणिकता का क्षरण और ऐतिहासिक स्थलों को नुकसान हो सकता है। सतत पर्यटन सांस्कृतिक विरासत की रक्षा और संरक्षण के महत्व पर बल देता है, साथ ही पर्यटकों को स्थानीय परंपराओं और रीति-रिवाजों का सम्मानजनक तरीके से अनुभव करने का अवसर प्रदान करता है। इसमें ऐतिहासिक स्मारकों का रखरखाव, सांस्कृतिक परिदृश्यों का संरक्षण और पवित्र या सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्रों की सुरक्षा शामिल है। सतत पर्यटन स्थानीय कला, शिल्प, संगीत और पारंपरिक प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए भी प्रोत्साहित करता है, जिससे सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करने और स्थानीय समुदायों के लिए आर्थिक अवसर प्रदान करने में मदद मिल सकती है। सांस्कृतिक विरासत का सम्मान करके, पर्यटन मेजबान स्थलों के अनूठे चरित्र को संरक्षित करते हुए सांस्कृतिक आदान-प्रदान में योगदान दे सकता है।

पर्यटन स्थलों में प्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन कार्यक्रमों को लागू करना एक और महत्वपूर्ण रणनीति है। पर्यटन से भारी मात्रा में अपशिष्ट उत्पन्न होता है, जिसमें प्लास्टिक पैकेजिंग, खाद्य अपशिष्ट और अन्य डिस्पोजेबल सामग्री शामिल हैं। उचित अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों के अभाव में, यह अपशिष्ट प्राकृतिक क्षेत्रों में जमा हो सकता है और पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुंचा सकता है। सतत पर्यटन पहल पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए अपशिष्ट को कम करने, उसका

पुनः उपयोग करने और पुनर्चक्रण को प्रोत्साहित करती हैं। होटल और रेस्तरां अपशिष्ट पृथक्करण प्रणालियों को अपना सकते हैं, जैविक अपशिष्ट का खाद बना सकते हैं और एकल-उपयोग प्लास्टिक का उपयोग कम कर सकते हैं। सरकारें और स्थानीय प्राधिकरण भी पर्यटन स्थलों में अपशिष्ट संग्रहण, पुनर्चक्रण अवसंरचना और पर्यावरण निगरानी में सुधार के लिए नीतियां लागू कर सकते हैं।

सामुदायिक आधारित पर्यटन भी सतत पर्यटन विकास का एक महत्वपूर्ण घटक है। इस दृष्टिकोण में स्थानीय समुदायों को पर्यटन गतिविधियों की योजना, प्रबंधन और संचालन में प्रत्यक्ष रूप से शामिल किया जाता है। बेकेन (2007) के अनुसार, पर्यटन विकास में सामुदायिक भागीदारी यह सुनिश्चित करने में सहायक होती है कि पर्यटन से स्थानीय निवासियों को लाभ मिले और साथ ही प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों का संरक्षण भी हो। सामुदायिक आधारित पर्यटन में, स्थानीय लोग आगंतुकों को आवास, मार्गदर्शक सेवाएं, सांस्कृतिक अनुभव और पारंपरिक भोजन उपलब्ध करा सकते हैं। यह मॉडल समुदायों को अपनी सांस्कृतिक पहचान और पर्यावरणीय संसाधनों के संरक्षण के साथ-साथ पर्यटन विकास पर नियंत्रण बनाए रखने की अनुमति देता है। यह जिम्मेदार पर्यटन प्रथाओं को भी प्रोत्साहित करता है क्योंकि स्थानीय निवासियों का पर्यावरण संरक्षण और भविष्य के लिए पर्यटन को बनाए रखने में प्रत्यक्ष हित होता है।

पर्यटन और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं

पर्यटन पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो कि वे लाभ हैं जो मनुष्य प्रकृति से प्राप्त करता है। इन सेवाओं में प्राकृतिक संसाधन, पर्यावरण नियमन और पारिस्थितिकी तंत्र द्वारा प्रदान किए जाने वाले सांस्कृतिक और मनोरंजक लाभ शामिल हैं। सतत पर्यटन प्राकृतिक वातावरण के संरक्षण को प्रोत्साहित करता है क्योंकि ये संसाधन पर्यटकों को आकर्षित करते हैं और पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा देते हैं। मिलेनियम इकोसिस्टम असेसमेंट (एमईए, 2005) के अनुसार, पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को प्रावधान, विनियमन और सांस्कृतिक सेवाओं में वर्गीकृत किया जा सकता है, जो सभी पर्यटन विकास से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं।

प्रावधान सेवाएँ: पर्यटन का तात्पर्य उन प्राकृतिक संसाधनों से है जो पारिस्थितिकी तंत्र प्रदान करते हैं, जैसे स्वच्छ जल, भोजन और वन उत्पाद। सतत पर्यटन, जिम्मेदार उपयोग और संरक्षण को बढ़ावा देकर इन संसाधनों की निरंतर उपलब्धता सुनिश्चित करने में सहायक होता है। पर्यटन व्यवसायों और स्थानीय समुदायों को जल, वन और अन्य प्राकृतिक संसाधनों का सावधानीपूर्वक प्रबंधन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ताकि वे पर्यटन और स्थानीय आजीविका दोनों के लिए उपलब्ध रहें।

सेवाओं का विनियमन पर्यटन में वे प्राकृतिक प्रक्रियाएं शामिल हैं जो पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखती हैं, जैसे कि जलवायु विनियमन, जल शुद्धिकरण और मृदा संरक्षण। पर्यटन राष्ट्रीय उद्यानों, जंगलों, आर्द्रभूमियों और रेगिस्तानी पारिस्थितिक तंत्रों जैसे प्राकृतिक क्षेत्रों के संरक्षण को प्रोत्साहित करके इन सेवाओं का समर्थन कर सकता है। इन क्षेत्रों में पर्यटकों की रुचि अक्सर संरक्षण प्रयासों और वित्तपोषण को बढ़ावा देती है जो पारिस्थितिक संतुलन और जैव विविधता को बनाए रखने में सहायक होते हैं।

सांस्कृतिक सेवाएँ: पर्यटन से तात्पर्य प्रकृति से प्राप्त होने वाले उन गैर-भौतिक लाभों से है, जिनमें मनोरंजन, सौंदर्यबोध और सांस्कृतिक या आध्यात्मिक मूल्य शामिल हैं। पर्यटन आगंतुकों को प्राकृतिक परिदृश्यों की सुंदरता और विशिष्टता का अनुभव करने का अवसर प्रदान करता है, जिससे पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ती है। प्रकृति और सांस्कृतिक विरासत के प्रति सराहना को बढ़ावा देकर, पर्यटन पर्यटकों और स्थानीय समुदायों दोनों को इन मूल्यवान पारिस्थितिक तंत्रों की रक्षा करने के लिए प्रोत्साहित करता है (एमईए, 2005)।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि राजस्थान में पर्यटन और पर्यावरण संरक्षण का संबंध विरोधी नहीं, बल्कि संतुलन-आधारित है। जब पर्यटन अनियंत्रित, अति-व्यावसायिक और संसाधन-असंवेदनशील रूप में विकसित होता है, तब यह जल-अभाव, अपशिष्ट, प्रदूषण, आवास-विनाश और सांस्कृतिक क्षरण जैसी समस्याओं को जन्म देता है। परंतु जब वही पर्यटन सतत नियोजन, वहन-क्षमता, स्थानीय समुदायों की भागीदारी, हरित अवसंरचना, अपशिष्ट प्रबंधन, जल-संरक्षण और प्रकृति-आधारित नीति ढाँचे के भीतर संचालित होता है, तब वह

पर्यावरण संरक्षण का प्रभावी माध्यम भी बन सकता है। राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय नीतियाँ अब स्पष्ट रूप से इसी दिशा में आगे बढ़ रही हैं।

संदर्भ

शर्मा, आर., और सिंह, एस. (2019). राजस्थान में लगातार टूरिज्म और पर्यावरण संरक्षण. जर्नल ऑफ टूरिज्म एंड हॉस्पिटैलिटी मैनेजमेंट, 7(2), 85–96.

राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों में जैव विविधता पर टूरिज्म विकास का प्रभाव. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एनवायरनमेंटल स्टडीज, 76(5), 745–758.

गुप्ता, वी., और शर्मा, पी. (2020). राजस्थान में पारिस्थितिक स्थिरता के एक साधन के रूप में इकोटूरिज्म. टूरिज्म प्लानिंग एंड डेवलपमेंट, 17(4), 412–428.

राठौड़, एम. एस., और चौधरी, आर. (2020). राजस्थान में टूरिज्म विकास और पारिस्थितिक चुनौतियाँ. साउथ एशियन जर्नल ऑफ टूरिज्म एंड हेरिटेज, 13(1), 45–60.

सिंह, डी., और जैन, आर. (2020). राजस्थान के संरक्षित इलाकों में टूरिज्म के दबाव का मैनेजमेंट. एनवायरनमेंटल कंजर्वेशन जर्नल, 21(3), 123–132.

शर्मा, एन., और भाटिया, वी. (2021). राजस्थान के वाइल्डलाइफ अभयारण्यों में इकोटूरिज्म की प्रथाएँ और संरक्षण प्रक्रियाएं. जर्नल ऑफ इकोटूरिज्म, 20(3), 225–240.

खान, एस., और अली, एम. (2021). राजस्थान में लगातार टूरिज्म नीतियाँ और पर्यावरण संरक्षण. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ टूरिज्म रिसर्च, 23(6), 1015–1027.

राजस्थान टूरिज्म डिपार्टमेंट. (2021). टूरिज्म और सतत विकास रिपोर्ट. राजस्थान सरकार.

सिंह, पी., और यादव, एस. (2022). राजस्थान में टूरिज्म के जरिए पर्यावरण संरक्षण में कम्युनिटी भागीदारी की भूमिका. जर्नल ऑफ सस्टेनेबल टूरिज्म, 30(8), 1802–1818.

मेहता, आर., और जोशी, डी. (2022). थार रेगिस्तान में टूरिज्म विकास और पर्यावरणीय स्थिरता. एनवायरनमेंटल डेवलपमेंट, 43, 100725.

- संयुक्त राष्ट्र विश्व टूरिज्म ऑर्गनाइजेशन. (2022). विकासशील क्षेत्रों में लगातार टूरिज्म और पर्यावरण मैनेजमेंट. यूएनडब्ल्यूटीओ
- शर्मा, ए., और गुप्ता, एस. (2023). राजस्थान में विरासत टूरिज्म और पर्यावरण संरक्षण. जर्नल ऑफ हेरिटेज टूरिज्म, 18(4), 490–505.
- वर्मा, एच., और सिंह, टी. (2023). राजस्थान के राष्ट्रीय उद्यानों में टूरिज्म गतिविधियों के पर्यावरणीय प्रभाव. जर्नल ऑफ एनवायरनमेंटल मैनेजमेंट, 330, 117055.
- राजस्थान सरकार. (2024). राजस्थान टूरिज्म नीति और सतत विकास पहल. जयपुर: टूरिज्म डिपार्टमेंट.
- जोशी, पी., और राठौड़, के. (2025). राजस्थान में टूरिज्म की स्थिरता और पर्यावरण संरक्षण की व्यवस्थाएं. जर्नल ऑफ सस्टेनेबल डेवलपमेंट स्टडीज, 17(1), 55–70.